

सुनना चाही गर सुझको तूम ती बरुक राजु बताता
रुक साक्षात्ता बालक का मे जीवन राम सुनाता

देख रहा मीठा सपना था कोसल के बलु मे दुसके
तुम्ही किसी ने दिन लिए सब येन मेरे वह पल
- उसके

जानी पहचानी वह बोली हर पल प्यार जताती थी
ना जाने पर मारे क्या होते तोरी सी चुभ जाती थी

स्नान ध्यान वलाध वह करके भोजन को अकुलाता था
रुक प्याली दूध रौती का स्वाद उस नही खाता था

सुनकर गाड़ी की आवाज वह झटपट दौड़ लगाता था
कभी कलम और कभी लिफ्ट वह घर ~~खुशी~~ मूल जाता
- था

विद्यालय जाते ही मानो उसके पर लगा जाते थे
वही सिली रुक वानर सेना मिलकर हुआ लगाते थे

कक्षा के भीतर तो जैसे उसकी साँप सूँघ जाता
पढ़ने लिखने की बातों मे उसका मन ना लगा पाता

साली बीत गरु कुछ रैखे, हार गरु सब ससझाकर
कभी किताबी पर तू ह्यान दे, या आसना रिक्शा कल

हर दिन के भाँति ही आज भी सूर्य उदय वैसा ही था
फिर क्यों ऐसी बात ~~लगी~~ लगी के मानो नया सबेरा था

आज नहीं पेंडा वह बालक, नहीं आज ^{कुछ} ~~कुछ~~ था भूला
कक्षा में आजान पर भी कदम आज उसका ना डाला

राज की भाँति ही बस्ता आज भी कुछ लाल ही था
थी कलम, थी वही किताबें, पर अधिक कुछ भार भी
- था

मिला भार कई दिनों बाद जब बचपन का आराम दिया
~~भार~~ भार नहीं था बस्ते में, वह तो कथों की शाम मिला

- सत्यम